थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

प्रेमचंद का साहित्य और सामाजिक यथार्थ

प्रहलाद सिंह अहलूवालिया, संपादक, शोध प्रकाशन, हिसार, हरियाणा

मेल आई डी : ahluwalia002@gmail.com

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचंद, जिन्हें हिंदी और उर्दू साहित्य का 'उपन्यास सम्राट' माना जाता है, ने भारतीय समाज के यथार्थ को अपनी रचनाओं के माध्यम से बखूबी प्रस्तुत किया। उनका साहित्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने में भी मदद करता है। प्रेमचंद का लेखन गरीबों, किसानों, और महिलाओं की समस्याओं को उजागर करता है, जो उनके समय की सामाजिक वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व करता है। इस शोध पत्र में प्रेमचंद के साहित्य और उसमें निहित सामाजिक यथार्थ का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

प्रेमचंद का जीवन और साहित्यिक यात्रा

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ। उनका असली नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। उनके जीवन में कई कठिनाइयाँ आईं, जिनमें आर्थिक तंगी और पारिवारिक समस्याएँ शामिल थीं। ये अनुभव उनके लेखन में गहराई और यथार्थता लाए। प्रेमचंद ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के उन वर्गों की आवाज उठाई, जिन्हें आमतौर पर नजरअंदाज किया जाता था।

प्रेमचंद की प्रमुख कृतियाँ हैं:

- उपन्यास: गोदान, गबन, सेवासदन, निर्मला, रंगभूमि

- कहानियाँ: कफन, पूस की रात, ईदगाह, सद्गति

इन रचनाओं में प्रेमचंद ने समाज के विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया है, जैसे कि गरीबी, शोषण, और सामाजिक असमानता।

प्रेमचंद की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ

1. किसान और श्रमिक जीवन

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

प्रेमचंद की रचनाओं में किसान और श्रमिक जीवन का सशक्त चित्रण मिलता है। उनके उपन्यास "गोदान" में होरी नामक किसान की कहानी है, जो अपने जीवन में संघर्ष करता है। यह उपन्यास भारतीय कृषि व्यवस्था की समस्याओं को उजागर करता है, जैसे कि कर्ज, भूख, और शोषण। प्रेमचंद ने किसानों की समस्याओं को उस समय के सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में प्रस्तुत किया, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

2. स्त्री विमर्श

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में महिलाओं की स्थिति और समस्याओं पर भी ध्यान केंद्रित किया। "निर्मला" उपन्यास में उन्होंने बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों का चित्रण किया है। निर्मला की कहानी एक ऐसी लड़की की है, जिसे समाज की बेड़ियों में जकड़ा गया है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों और उनकी स्वतंत्रता की आवश्यकता को रेखांकित किया।

3. सामाजिक असमानता

प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक असमानता का भी गहरा चित्रण मिलता है। "कफन" कहानी में दो मजदूरों की गरीबी और उनके संघर्ष को दर्शाया गया है। इस कहानी में प्रेमचंद ने यह दिखाया है कि कैसे समाज की असमानता और आर्थिक तंगी इंसान को नैतिकता से दूर ले जाती है। यह कहानी समाज के उन वर्गों की आवाज है, जिन्हें अक्सर नजरअंदाज किया जाता है।

प्रेमचंद का यथार्थवाद

प्रेमचंद का लेखन यथार्थवाद पर आधारित है। उन्होंने अपने पात्रों और उनके संघर्षों को वास्तविकता के निकट लाने का प्रयास किया। उनका मानना था कि साहित्य का उद्देश्य समाज की सच्चाइयों को उजागर करना है। प्रेमचंद ने अपने पात्रों के माध्यम से समाज की समस्याओं को न केवल दर्शाया, बल्कि उनके समाधान की भी आवश्यकता को रेखांकित किया।

प्रेमचंद का प्रभाव और विरासत

प्रेमचंद का साहित्य न केवल उनके समय में बल्कि आज भी प्रासंगिक है। उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रभावित करती हैं और सामाजिक मुद्दों पर सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रेमचंद ने साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद की नींव रखी, जिसने बाद के लेखकों को भी प्रेरित किया। उनके विचार और दृष्टिकोण आज भी साहित्यिक और सामाजिक विमर्श का हिस्सा हैं।

निष्कर्ष

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 3, अप्रैल - जून 2024
Online Available : https://thati.net/

मुंशी प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज के यथार्थ का एक सशक्त प्रतिबिंब है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों की आवाज उठाई और उनके संघर्षों को उजागर किया। प्रेमचंद की रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को भी रेखांकित करती हैं। उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता, और उनका साहित्य हमेशा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

Citations:

[1] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6

[2] https://www.jetir.org/papers/JETIR2205C65.pdf

[3] https://gyansindhuclasses.in/premchand-ka-jivan-parichay/

[4] https://www.amarujala.com/kavya/kavya-charcha/premchand-legendary-writer-premchand-ka-jivan-parichay-premchand-ke-upanyas-premchand-ki-rachnaye-in-hindi

[5] https://ijariie.com/AdminUploadPdf/A_Study_of_Social_Realism_in_the_Novels_of_Munshi_Premchandra_ijariie18867.pdf

[6] http://www.indianvoice24.com/munshi-premchand-samantwad-and-ideology-of-communism-iv24-31722/

[7] https://www.amarujala.com/kavya/main-inka-mureed/celebrating-literary-works-and-life-of-munshi-premchand

[8] https://hindikahani.hindi-kavita.com/Biography-Munshi-Premchand.php